उवसमसेडीपाओग्गविसोहीए विसुद्धो (४) अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो सुहुमो (९) अणियट्टी (१०) अपुव्वो जादो (११) अंतरिदो । पुव्वकोडिं संजममणुपालिय तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिगेसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउगेसु मणुसेसु उववण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए अपुव्वो जादो (१२) । लद्धमंतरं । तदो अणियट्टी (१३) सुहुमो (१४) उवसंतो (१५) पुणो सुहुमो (१६) अणियट्टी (१७) अपुव्वो जादो (१८) । उवरि अप्पमत्तादिणवअंतोमुहुत्तेहि सिद्धिं गदो । एवमट्ठवस्सेहि सत्तावीसअंतोमुहुत्तेहि ऊणदोपुव्व-कोडीहि सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतरं । एवं चेव[1] तिण्हमुवसामगाणं । णवरि पंचवीस तेवीस एक्कवीस मुहुत्ता ऊणा कादव्वा ।

चदुण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं[2] ॥३४७॥

सजोगिकेवली ओघं ॥३४८॥

....

उपशमश्रेणीके योग्य विशुद्धिसे विशुद्ध हो (४) अपूर्वकरण (५) अनिवृत्तिकरण (६) सूक्ष्मसाम्पराय (७) उपशान्तकषाय (८) हो, पुनः सूक्ष्मसाम्पराय (९) अनिवृत्तिकरण (१०) अपूर्वकरण हुआ (११) और अन्तरको प्राप्त होगया । पुनः पूर्वकोटि तक संयमको परिपालनकर तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । जीवनके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर अपूर्वकरण हुआ (१२) । इस प्रकार अन्तर लब्ध होगया । पुनः अनिवृत्तिकरण (१३) सूक्ष्मसाम्पराय (१४) उपशान्तकषाय (१५) पुनः सूक्ष्मसाम्पराय (१६) अनिवृत्तिकरण (१७) और अपूर्वकरण (१८) हुआ । पश्चात् ऊपरके अप्रमत्तादि गुणस्थानसंबंधी नौ अन्तर्मुहूर्तोंसे सिध्दिको प्राप्त हुआ । इस प्रकार आठ वर्षोंसे और सत्ताईस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम दो पूर्वकोटियोंसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि अपूर्वकरणसंयतका उत्कृष्ट अन्तर है । इसी प्रकार शेष तीन उपशामकोंका भी अन्तर जानना चाहिए । विशेषता यह है कि अनिवृत्तिकरण उपशामकके पचीस अन्तर्मुहूर्त, सूक्ष्मसाम्पराय उपशामकके तेवीस अन्तर्मुहूर्त और उपशान्तकषायके इक्कीस अन्तर्मुहूर्त कम करना चाहिए ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥३४७॥

क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥३४८॥

....

[1] ता. १-२ प्रत्योः एवं तिण्ह इति पाठः ।

[2] शेषाणां सामान्यवत् । स.सि. १,८.

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणं सम्मादिट्ठिभंगो[1] ॥३४९॥

सम्मत्तमग्गणाए ओघम्हि जधा असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं परूविदं तधा एत्थ वि परूवेदव्वं[2] ।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[3] ॥३५०॥

सुगममेदं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[4] ॥३५१॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण छावट्ठि सागरोवमाणि देसूणाणि[5] ॥३५२॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर सम्यग्दृष्टिसामान्यके समान है ॥३४९॥

जिस प्रकारसे सम्यक्त्वमार्गणाके ओघमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर कहा है, उसी प्रकारसे यहां पर भी कहना चाहिए ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें संयतासंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३५०॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५१॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छयासठ सागरोपम है ॥३५२॥

[1] क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिष्वसंयतसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । उत्कर्षेण पूर्वकोटी देशोना । स.सि. १,८. [2] ता. १-मु. प्रतौ परूविदव्वं इति पाठ : ।

[3] संयतासंयतस्य नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

[4] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स,सि. १,८.

[5] उत्कर्षेण षट्षष्टिसागरोपमाणि देशोनानि । स.सि. १,८

तं जहा-एक्को मिच्छादिट्ठी वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तमच्छिय संजमं पडिवण्णो अंतरिदो। जत्तियं कालं संजामासंजमेण संजमेण च अच्छिदो तेत्तियमेत्तेणूणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिदेवेसु उववण्णो। तदो चुदो मणुसेसु उववण्णो। तत्थ जत्तियं कालं असंजमेण संजमेण वा[1] अच्छदि, पुणो सग्गादो मणुसगदिमागंतूण जं वासपुधत्तादिकालमच्छिस्सदि तेहि दोहि वि कालेहि ऊणतेत्तीससागरोवमआउट्ठिदिएसु देवेसु उववण्णो। तदो चुदो मणुसो जादो। बे अंतोमुहुत्तावसेसे वेदगसम्मत्तकाले परिणामपच्चएण संजमासंजमं पडिवण्णो। लद्धमंतरं। तदो अंतोमुहुत्तेण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्मादिट्ठी जादो। आदिल्लमेक्कं अंतिल्ला दुवे[2] अंतोमुहुत्ता, एदेहि तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि छावट्ठिसागरोवमाणि संजदासंजदुक्कस्संतरं।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[3] ॥३५३॥

सुगममेदं।

....

जैसे-एक मिथ्यादृष्टि जीव वेदकसम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ। अन्तर्मुहूर्त रह कर पुनः संयमको प्राप्त हो अन्तरको प्राप्त हुआ। पुनः मरणकर जितने काल संयमासंयम और संयमके साथ रहा था उतने ही कालसे कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। वहां पर जितने काल असंयमके अथवा संयमके साथ रहा है और स्वर्गसे मनुष्यगतिमें आकर जितने वर्षपृथक्त्वादि काल असंयम अथवा संयमके साथ रहेगा उन दोनों ही कालोंसे कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो मनुष्य हुआ। इस प्रकार वेदकसम्यक्त्वके कालमें दो अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर परिणामोंके निमित्तसे संयमासंयमको प्राप्त हुआ। तब अन्तर लब्ध हुआ। पुनः अन्तर्मुहूर्तसे दर्शनमोहनीयका क्षपणकर क्षायिकसम्यग्दृष्टि होगया। इस प्रकार आदिका एक और अन्तके दो अन्तर्मुहूर्त, इन तीन अन्तर्मुहूर्तोंसे कम छ्यासठ सागरोपमकाल वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर है।

वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३५३॥

यह सूत्र सुगम है।

....

[1] ता. १ प्रतौ असंजमेण वा इति पाठ :।

[2] मप्रतौ 'दुमे' इति पाठः।

[3] प्रमत्ताप्रमत्तसंयतयोर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८.

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[1] ॥३५४॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि[2] ॥३५५॥

तं जहा-एक्को पमत्तो अप्पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय समऊण [3]तेत्तीस-सागरोवमाउट्ठिदिएसु देवेसुववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववण्णो। अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे पमत्तो जादो। लद्धमंतरं। खइयं पट्ठविय खवगसेडीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण (२) खवगसेढिमारूढो अपुव्वादि छअंतोमुहुत्तेहि णिव्वुदो। अंतरस्स आदिल्लमेक्कमंतोमुहुत्तं अंतरबाहिरेसु अट्ठअंतोमुहुत्तेसु सोहिदे अवसेसा सत्त अंतोमुहुत्ता। एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि पमत्तसंजदुक्कस्संतरं।

अप्पमत्तस्स उच्चदे-एक्को अप्पमत्तो पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) समऊणतेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिदेवेसु उववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु[4] मणुसेसु

....

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५४॥

यह सूत्र भी सुगम है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागरोपम है ॥३५५॥

जैसे-एक प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत हो अन्तर्मुहूर्त रहकर एक समय कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। संसारके अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अवशिष्ट रह जाने पर प्रमत्तसंयत हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। पुनः क्षायिकसम्यक्त्वको प्रस्थापितकर क्षपकश्रेणीके योग्य अप्रमत्तसंयत हो (२) क्षपकश्रेणीपर चढा और अपूर्वकरणादि छह अन्तर्मुहूर्तोंसे निर्वाणको प्राप्त हुआ। अन्तरके आदिके एक अन्तर्मुहूर्तको अन्तरके बाहिरी आठ अन्तर्मुहूर्तोंमेंसे कम कर देने पर अवशिष्ट सात अन्तर्मुहूर्त रहते हैं, इनसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर है।

वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका अन्तर कहते हैं-एक अप्रमत्तसंयत जीव, प्रमत्तसंयत हो अन्तर्मुहूर्त रहकर (१) एक समय कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। आयुके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट

....

[1] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८.

[2] उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि। स.सि. १,८.

[3] मु. प्रतौ मिच्छिय तेत्तीस इति पाठ :।

[4] मु. प्रतौ पुव्वकोडाएसु इति पाठः।

उववण्णो। अंतोमुहुत्तावसेसे आउए अप्पमत्तो जादो। लद्धमंतरं (१)। तदो [1]पमत्ता पमत्तसंजदट्ठाणे खइयं पट्ठविय (२) खवगसेडीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण (३) खवगसेढीमारूढो अपुव्वादिछहि अंतोमुहुत्तेहि णिव्वुदो। अंतरस्सादिल्लमेक्कं बाहिरेसु णवसु अंतोमुहुत्तेसु सोहिदे अवसेसा अट्ठ। एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अप्पमत्तुक्कस्संतरं।

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[2] ॥३५६॥

णिरंतरमुवसमसम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाभावा।

उक्कस्सेण सत्त रादिंदियाणि[3] ॥३५७॥

किमत्थो सत्तरादिंदियविरहणियमो ? सभावदो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[4] ॥३५८॥

तं जहा-एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय असंजदो जादो। अंतोमुहुत्तमच्छिदूण

....

रह जाने पर अप्रमत्तसंयत हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध होगया (१)। तत्पश्चात् प्रमत्त या अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यक्त्वको प्रस्थापितकर (२) क्षपकश्रेणीके प्रायोग्य अप्रमत्तसंयत होकर (३) क्षपकश्रेणीपर चढा और अपूर्वकरणादि छह अन्तर्मुहूर्तोंसे निर्वाणको प्राप्त हुआ। अन्तरके आदिका एक अन्तर्मुहूर्त बाहरी नौ अन्तर्मुहूर्तोंसे घटा देने घर अवशिष्ट आठ अन्तर्मुहूर्त रहे। इनसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥३५६॥

क्योंकि, निरन्तर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले जीवोंका अभाव है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर सात रात-दिन (अहोरात्र) है ॥३५७॥

शंका- सात रात-दिनोंके अन्तरका नियम किसलिए है ?

समाधान- स्वभावसे ही है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५८॥

जैसे-एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर असंयतसम्यग्दृष्टि हुआ और अन्तर्मुहूर्त

....

[1] मु. प्रतौ पमत्तापमत्त इति पाठः।

[2] औपशमिकसम्यग्दृष्टिष्वसंयतसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। स.सि. १,८.

[3] उत्कर्षेण सप्त रात्रिदिनानि। स.सि. १,८. [4] एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८.

संजमासंजमं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तेण पुणो असंजदो जादो। लद्धं जहण्णंतरं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥३५९॥

तं जहा –एक्को सेडीदो ओदरिय असंजदो जादो। तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय संजमासंजमं पडिवण्णो। तदो अप्पमत्तो पमत्तो होदूण असंजदो जादो। लद्धमुक्कस्संतरं।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[1] ॥३६०॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण चोद्दस रादिंदियाणि[2] ॥३६१॥

एदं पि सुगमं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं[3] ॥३६२॥

तं जहा–एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय संजमासंजमं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्त –

....

रहकर संयमासंयमको प्राप्त हुआ। अन्तर्मुहूर्तसे पुनः असंयत होगया। इस प्रकार जघन्य अन्तर लब्ध हुआ।

उक्त जोवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५९॥

जैसे–एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर असंयतसम्यग्दृष्टि हुआ। वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर संयमासंयमको प्राप्त हुआ। पश्चात् अप्रमत्त और प्रमत्तसंयत होकर असंयतसम्यग्दृष्टि होगया। इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर लब्ध हुआ।

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥३६०॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर चौदह रात–दिन है ॥३६१॥

यह सूत्र भी सुगम है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६२॥

जैसे–एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर संयमासंयमको प्राप्त हुआ और अन्त–

....

१ संयतासंयतस्य नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। स.सि. १,८.

२ उत्कर्षेण चतुर्दश रात्रिदिनानि। स.सि. १,८.

३ एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८.

मच्छिय असंजदो जादो। पुणो वि अंतोमुहुत्तेण संजमासंजमं पडिवण्णो। लद्धं जहण्णंतरं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥३६३॥

तं जहा-एक्को सेडीदो ओदरिय संजदासंजदो जादो। अंतोमुहुत्तमच्छिय अप्पमत्तो पमत्तो असंजदो च होदूण संजदासंजदो जादो। लद्धमुक्कस्संतरं।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[1] ॥३६४॥

सुगममेदं।

उक्कस्सेण पण्णारस रादिंदियाणि[2] ॥३६५॥

एदं पि सुगमं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[3] ॥३६६॥

तं जहा-एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय पमत्तो होदूण अंत्तोमुहुत्तमच्छिय अप्प-

....

मुहूर्त रहकर असंयतसम्यग्दृष्टि होगया। फिर भी अन्तर्मुहूर्तसे संयमासंयमको प्राप्त हुआ। इस प्रकार जघन्य अन्तर लब्ध हुआ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६३॥

जैसे-एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर संयतासंयत हुआ। अन्तर्मुहूर्त रहकर अप्रमत्तसंयत्त, प्रमत्तसंयत और असंयतसम्यग्दृष्टि होकर संयतासंयत होगया। इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर लब्ध हुआ।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥३६४॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह रात-दिन है ॥३६५॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६६॥

जैसे-एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत हो अन्तर्मुहूर्त रह कर

....

[1] प्रमत्ताप्रमत्तसंयतयोर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। स.सि.१,८.

[2] उत्कर्षेण पंचदश रात्रिदिनानि । स.सि. १,८.

[3] एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८.

मत्तो जादो । पुणो वि पमत्तत्तं गदो । लद्धमंतरं । एवं चेव अप्पमत्तस्स वि जहण्णंतरं वत्तव्वं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥३६७॥

तं जहा- एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय पमत्तो होदूण पुणो संजदासंजदो असंजदो अप्पमत्तो च होदूण पमत्तो जादो । लद्धमंतरं । अप्पमत्तस्स उच्चदे-एक्को सेडीदो ओदरिय अप्पमत्तो जादो । पुणो पमत्तो असंजदो संजदासंजदो च होदूण भूओ अप्पमत्तो जादो । लद्धमुक्कस्संतरं ।

तिण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[1] ॥३६८॥

उक्कस्सेण वासपुधत्तं[2] ॥३६९॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अप्रमत्तसंयत हुआ । फिर भी प्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुआ । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ । इसी प्रकारसे उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका भी जघन्य अन्तर कहना चाहिए ।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६७॥

जैसे-एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत होकर पुनः संयतासंयत, असंयत और अप्रमत्तसंयत होकर प्रमत्तसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ । उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर अप्रमत्तसंयत हुआ । पुनः प्रमत्तसंयत, असंयत और संयतासंयत होकर फिर भी अप्रमत्तसंयत होगया । इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर लब्ध हुआ ।

उपशमसम्यग्दृष्टि अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय, इन तीनों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥३६८॥

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥३६९॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

१ त्रयाणामुपशमकाना नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः । स.सि. १,८.

२ उत्कर्षेण वर्षपृथक्त्वम् । स.सि. १,८. ता. २ प्रतौ अंतोमंतोमुहुत्तं इति पाठः।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[1] ॥३७०॥

तं जहा-उवसमसेढिं चढिय आदिं करिय पुणो उवरिं गंतूण ओदरिय अप्पिदगुणं पडिवण्णस्स अंतोमुहुत्तमंतरं होदि।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥३७१॥

एदस्स जहण्णभंगो। णवरि विसेसा[2] बिदियवारं चढमाणस्स जहण्णंतरं, पढमवारं चढिय ओदिण्णस्स उक्कस्संतरं वत्तव्वं।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्थाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं[3] ॥३७२॥

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ॥३७३॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[4] ॥३७४॥

....

उक्त तीनों उपशामकोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३७०॥

जैसे-उपशमश्रेणीपर चढकर आदि करके फिर भी ऊपर जाकर और उतरकर विवक्षित गुणस्थानको प्राप्त होनेवाले जीवमें अन्तर्मुहूर्तप्रमाण जघन्य अन्तर होता है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३७१॥

इस उत्कृष्ट अन्तरकी प्ररूपणा भी जघन्य अन्तरकी प्ररूपणाके समान जानना चाहिए। किन्तु विशेषता यह है कि उपशमश्रेणीपर द्वितीय बार चढनेवाले जीवके जघन्य अन्तर होता है और प्रथम बार चढकर उतरे हुए जीवके उत्कृष्ट अन्तर होता है, ऐसा कहना चाहिए।

उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥३७२॥

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥३७३॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं।

उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३७४॥

....

[1] एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८,

[2] मु. प्रतौ विसेसा इति पाठः।

[3] उपशान्तकषायस्य नानाजीवापेक्षया सामान्यवत्। स.सि. १,८.

[4] एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८.

हेट्ठिमगुणट्ठाणेसु अंतराविय सव्वजहण्णेण कालेण पुणो उवसंतकसायभावं गयस्स जहण्णंतरं किण्ण उच्चदे। ण, हेट्ठा ओइण्णस्स वेदगसम्मत्तमपडिवज्जिय पुव्वुवसम-सम्मत्तेणुवसमसेढीसमारुहणे संभवाभावादो । तं पि कुदो ? उवसमसेडीस-मारुहणपाओग्गकालादो सेसुवसमसम्मत्तद्धाए त्थोवत्तुवलंभादो । तं पि कुदो णव्वदे। उवसंतकसायएगजीवस्संतराभावण्णहाणुववत्तीदो ।

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एयसमयं[1] ॥३७५॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो[2] ॥३७६॥

एदं पि सुगमं ।

....

शंका- नीचेके गुणस्थानोंमें अन्तरको प्राप्त कराकर सर्वजघन्य कालसे पुनः उपशांतकषायताको प्राप्त हुए जीवके जघन्य अन्तर क्यों नहीं कहते हैं?

समाधान- नहीं, क्योंकि, उपशमश्रेणीसे नीचे उतरे हुए जीवके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुए विना पहलेवाले उपशमसम्यक्त्वके द्वारा पुनः उपशमश्रेणीपर समारोहण करनेकी सम्भावनाका अभाव है ।

शंका- यह कैसे जाना ?

समाधान- क्योंकि, उपशमश्रेणीके समारोहणयोग्य कालसे शेष उपशमसम्यक्त्वका काल अल्प पाया जाता है ।

शंका- यह भी कैसे जाना ?

समाधान- उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थके एक जीवके अन्तरका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता, इससे जाना जाता है कि उपशमश्रेणीके समारोहण कालसे शेष उपशमसम्यक्त्व का काल अल्प है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ॥३७५॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ॥३७६॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

....

१ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्टयोर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः । स.सि. १,८.

२ उत्कर्षेण पल्योपमासंख्येयभागः । स.सि. १,८.

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[1] ॥३७७॥

गुणंतरसंकंतीए[2] असंभवादो ।

मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[3] ॥३७८॥

कुदो? णाणाजीवपवाहस्स वोच्छेदाभावा, गुणंतरसंकंतीए अभावादो ।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठीणमोघं[4] ॥३७९॥

कुदो? णाणाजीवं पडुच्च अंतराभावेण, एगजीवं पडुच्च अंतोमुहुत्तं देसूणबे-छावट्ठिसागरोवममेत्तजहण्णुक्कस्संतरेहि य साधम्मुवलंभा ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था त्ति पुरिसवेदभंगो[5] ॥३८०॥

....

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३७७॥

क्योंकि, इन दोनोंका एक गुणस्थानसे दूसरे गुणस्थानमें परिवर्तन असम्भव है ।

मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३७८॥

क्योंकि, नाना जीवोंके प्रवाहका कभी विच्छेद नहीं होता है । तथा एक जीवका अन्य गुणस्थानोंमें संक्रमण भी नहीं होता है ।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई ।

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर ओघके समान है ॥३७९॥

क्योंकि, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे, एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ कम दो छ्यासठ सागरोपममात्र अन्तरोंकी अपेक्षा ओघसे समानता पाई जाती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थ तक संज्ञी जीवोंका अन्तर पुरुषवेदियोंके अन्तरके समान है ॥३८०॥

....

१ एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् । स.सि.१,८. २ ता. १ मु. प्रत्योः गुणसंकंतीए इति पाठः ।

३ मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया एकजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम् । स.सि १,८.

४ संज्ञानुवादेन संज्ञिषु मिथ्यादृष्टेः सामान्यवत् । स.सि. १,८.

५ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्ट्योर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येय ।

कुदो? सागरोवमसदपुधत्तट्ठिदिं पडि दोण्हं साधम्मुवलंभा। णवरि असण्णिट्ठिदिमच्छिय सण्णीसुप्पण्णस्स उक्कस्सट्ठिदी वत्तव्वा।

चदुण्हं खवाणमोघं[1] ॥३८१॥

सुगममेदं।

असण्णीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[2] ॥३८२॥

कुदो। असण्णिपवाहस्स वोच्छेदाभावा।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥३८३॥

कुदो? गुणसंकंतीए अभावादो।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता।

क्योंकि, सागरोपमशतपृथक्त्वस्थितिकी अपेक्षा दोनोंके अन्तरोंमें समानता पाई जाती है। विशेषता यह है कि असंज्ञी जीवोंकी स्थितिमें रहकर संज्ञी जीवोंमें उत्पन्न हुए जीवके उत्कृष्ट स्थिति कहना चाहिए।

संज्ञी चारों क्षपकोंका अन्तर ओघके समान है ॥३८१॥

यह सूत्र सुगम है।

असंज्ञी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३८२॥

क्योंकि, असंज्ञी जीवोंके प्रवाहका कभी विच्छेद नहीं होता है।

असंज्ञी जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३८३॥

क्योंकि, असंज्ञियोंमें गुणस्थानके परिवर्तनका अभाव है।

इस प्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई।

भागोऽन्तर्मुहूर्तश्च। उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वम्। असंयतसम्यग्दृष्टयाद्यप्रमत्तान्तानां नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम्। एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वम्। चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत्। एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वम्। स.सि. १,८.

[1] चतुर्णां क्षपकाणां सामान्यवत्। स.सि. १,८.

[2] असंज्ञिनां नानाजीवापेक्षयैकजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठीणमोघं[1] ॥३८४॥

सुगममेदं

सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं[2] ॥३८५॥

एदं पि सुगमं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं[3] ॥३८६॥

एदं पि अवगयत्थं।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उसप्पिणीओ[4] ॥३८७॥

तं जहा-एक्को सासणद्धाए दो समया अत्थि त्ति कालं गदो। एगविग्गहं कादूण

....

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर ओघके समान है ॥३८४॥

यह सूत्र सुगम है।

आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥३८५॥

यह सूत्र भी सुगम है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्योपमका असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३८६॥

इस सूत्रका अर्थ ज्ञात है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यतासंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल है ॥३८७॥

जैसे-एक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सासादनगुणस्थानके कालमें दो समय अवशिष्ट

....

१ आहारानुवादेन आहारकेषु मिथ्यादृष्टेः सामान्यवत्। स.सि. १,८.

२ सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्टयोर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत्। स.सि. १,८.

३ एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागोऽन्तर्मुहूर्तश्च। स.सि. १,८.

४ उत्कर्षेणांगुलासंख्येयभागा असंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः। स.सि. १,८.

बिदियसमए आहारी होदूण तदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे आहारकाले उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो। एगसमयावसेसे आहारकाले सासणं गंतूण विग्गहं गदो। दोहि समएहि ऊणो आहारुक्कस्सकालो सासणुक्कस्संतरं।

एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण देवेसुववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो[१] (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (४)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो (५)। लद्धमंतरं। तदो सम्मत्तेण वा मिच्छत्तेण वा अंतोमुहुत्तमच्छिदूण (६) विग्गहं गदो। छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहारकालो सम्मामिच्छादिट्ठिस्स उक्कस्संतरं।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं[२] ॥३८८॥

सुगममेदं।

....

रहने पर मरणको प्राप्त हुआ। एक विग्रह (मोड़ा) करके द्वितीय समयमें आहारक होकर और तीसरे समयमें मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ। असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों तक परिभ्रमणकर आहारककालमें अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। पुनः आहारककालके एक समयमात्र अवशिष्ट रहने पर सासादनको जाकर विग्रहको प्राप्त हुआ। इस प्रकार दो समयोंसे कम आहारकका उत्कृष्ट काल ही आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

मोहमकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न हुआ। छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ (४) और मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ। अंगुलके असंख्यातवें भाग कालप्रमाण परिभ्रमण कर सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ (५)। इस प्रकार अन्तर लब्ध होगया। पीछे सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्वके साथ अन्तर्मुहूर्त रह कर (६) विग्रहगतिको प्राप्त हुआ। इस प्रकार छह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम आहारककाल ही आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक आहारक जीवोंका अंतर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३८८॥

यह सूत्र सुगम है।

....

१ ता. २ प्रतौ त्तथदो (२) विसुद्धो इति पाठः।

२ असंयतसम्यग्दृष्ट्याद्यप्रमत्तान्तानां नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[1] ॥३८९॥

कुदो? गुणंतरं गंतूण सव्वजहण्णकालेण पुणो अप्पिदगुणं पडिवण्णस्स जहण्णं-तरुवलंभा।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ[2] ॥३९०॥

असंजदसम्मादिट्ठिस्स उच्चदे-एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण देवेसुववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो (४)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो (५)। लद्धमंतरं। उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए सासणं गंतूण विग्गहं गदो। पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहार- कालो उक्कस्संतरं।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३८९॥

क्योंकि, विवक्षित गुणस्थानसे अन्य गुणस्थानको जाकर और सर्वजघन्य कालसे लौटकर पुनः अपने विवक्षित गुणस्थानको प्राप्त होनेवाले जीवके जघन्य अन्तर पाया जाता है।

उक्त असंयतादि चार गुणस्थानवर्ती आहारक जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल है ॥३९०॥

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं-मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यातृष्टि जीव विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न हुआ। छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (४)। पीछे मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ और अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक परिभ्रमण करके अन्तमें उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ (५)। इस प्रकार अन्तर लब्ध होगया। पुनः उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशिष्ट रह जाने पर सासादनमें जाकर विग्रहको प्राप्त हुआ। इस प्रकार पांच अन्तर्मुहूर्तोंसे कम आहारककाल ही आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

[1] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । स.सि. १,८.

[2] उत्कर्षेणांगुलासंख्येयभागा असंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः। स.सि. १,८.

संजदासंजदस्स उच्चदे–एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण सण्णी सम्मुच्छिमेसु[1] उववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुद्धो (३) वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च समगं पडिवण्णो (४)। मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च समगं पडिवण्णो (५)। लद्धमंतरं। उवसमसम्मत्तद्धाए छावलियावसेसाए सासणं[2] गंतूण विग्गहं गदो। पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं।

पमत्तस्स उच्चदे–एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो। गब्भादिअट्ठवस्सेहि अप्पमत्तो (१) पमत्तो होदूण (२) मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते पमत्तो जादो। लद्धमंतरं (३)। कालं कादूण वग्गहं गदो। तिहि अंत्तोमुहुत्तेहि अट्ठवस्सेहि य ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं।

अप्पमत्तस्स एवं चेव। णवरि अप्पमत्तो (१) पमत्तो होदूण अंतरिदो सगट्ठिदिं परिभमिय अप्पमत्तो होदूण (२) पुणो पमत्तो जादो (३)। कालं करिय विग्गहं गदो।

....

आहारक संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं–मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव विग्रह करके संज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छिमोंमें उत्पन्न हुआ। छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुद्ध हो (३) वेदकसम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ (४)। पश्चात् मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हो अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक परिभ्रमणकर अन्तमें प्रथमोपशमसम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ (५)। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। पश्चात् उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशेष रहने पर सासादनको जाकर विग्रहको प्राप्त हुआ। इस प्रकार पांच अन्तर्मुहूर्तोंसे कम आहारककाल ही आहारक संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर है।

आहारक प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं–मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक जीव विग्रह करके मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। गर्भको आदि ले आठ वर्षोंसे अप्रमत्तसंयत (१) और प्रमत्तसंयत हो (२) मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ। अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक परिभ्रमण करके अन्तमें प्रमत्तसंयत हो गया। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ (३)। पश्चात् मरण करके विग्रहगतिको प्राप्त हुआ। इस प्रकार तीन अन्तर्मुहूर्त और आठ वर्षोंसे कम आहारककाल ही आहारक प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर है।

आहारक अप्रमत्तसंयतका भी अन्तर इसी प्रकार है। विशेषता यह है कि अप्रमत्तसंयत जीव (१) प्रमत्तसंयत होकर अन्तरको प्राप्त हो अपनी स्थितिप्रमाण परिभ्रमण कर अप्रमत्तसंयत हो (२) पुनः प्रमत्तसंयत हुआ (३)। पश्चात् मरण करके विग्रहको प्राप्त हुआ। इस प्रकार तीन

....

[1] मु. प्रतौ कादूण सम्मुच्छिमेसु इति पाठः।　[2] ता. २ प्रतौ साणं इति पाठः।

तिहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणो आहारकालो उक्कस्संतरं।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च-ओघभंगो[1] ॥३९१॥

सुगममेदं, बहुसो उत्तत्तादो।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं[2] ॥३९२॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ[3] ॥३९३॥

तं जहा-एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो। अट्ठवस्सिओ सम्मत्तं अप्पमत्तभावेण संजमं च समगं पडिवण्णो (१)। अणंताणुबंधिं[4] विसंजोएदूण (२) दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) तदो अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो वि परिवदमाणगो[5] सुहुमो (९) अणियट्टी (१०)

....

अन्तर्मुहूर्तोंसे कम आहारककाल ही आहारक अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर है।

आहारक चारों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥३९१॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसका अर्थ पहले बहुत वार कहा जा चुका है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३९२॥

यह सूत्र भी सुगम है।

आहारक चारों उपशामकोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी है ॥३९३॥

मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव विग्रह करके मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। आठ वर्षका होकर सम्यक्त्वको और अप्रमत्तभावके साथ संयमको एक साथ प्राप्त हुआ (१)। पुनः अनन्तानुबन्धीका विसंयोजन करके (२) दर्शनमोहनीयका उपशमनकर (३) प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानसम्बन्धी सहस्रों परिवर्तनोंको करके (४) पश्चात् अपूर्वकरण (५) अनिवृत्तिकरण (६) सूक्ष्मसाम्पराय (७) और उपशान्तकषाय होकर (८) फिर भी गिरता

....

[1] चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत्। स.सि. १,८.

[2] एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। स.सि. १,८.

[3] उत्कर्षेणांगुलासंख्येयभागा असंख्येयासंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः। स.सि. १,८

[4] मु. प्रतौ अणंताणुबंधी इति पाठः। [5] मु. प्रतौ परिवडमाणगो इति पाठः।

अपुव्वो जादो (११)। हेट्ठा ओदरिदूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते अपुव्वो जादो। लद्धमंतरं। णिद्दा-पयलाणं बंधे वोच्छिण्णे मरिय विग्गहं गदो। अट्ठवस्सेहि वारसअंतोमुहुत्तेहि य ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं। एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं। णवरि दस णव अट्ठ अंतोमुहुत्ता समयाहिया ऊणा कादव्वा।

चदुण्हं खवाणमोघं[1] ॥ ३९४ ॥

सुगममेदं।

सजोगिकेवली ओघं[1] ॥३९५॥

एदं पि सुगमं।

अणाहारा[2] कम्मइयकायजोगिभंगो[3] ॥३९६॥

....

हुआ सूक्ष्मसाम्पराय (९) अनिवृत्तिकरण (१०) और अपूर्वकरण हुआ (११)। पुनः नीचे उतरकर अन्तरको प्राप्त हो अंगुलके असंख्यातवें भाग कालप्रमाण परिभ्रमणकर अन्तमें अपूर्वकरण उपशामक हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। तत्पश्चात् निद्रा और प्रचला, इन दोनों प्रकृतियोंके बंधसे व्युच्छिन्न होनेपर मरकर विग्रहको प्राप्त हुआ। इस प्रकार आठ वर्ष और बारह अन्तर्मुहूर्तोंसे कम आहारककाल ही अपूर्वकरण उपशामकका उत्कृष्ट अन्तर है। इसी प्रकार शेष तीनों उपशामकोंका भी अन्तर कहना चाहिए। विशेषता यह है कि आहारककालमें अनिवृत्तिकरण उपशामकके दश, सूक्ष्मसाम्पराय उपशामकके नौ और उपशान्तकषाय उपशामकके आठ अन्तर्मुहूर्त और एक समय कम करना चाहिए।

आहारक चारों क्षपकोंका अन्तर ओघके समान है ॥३९४॥

यह सूत्र सुगम है।

आहारक सयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥३९५॥

यह सूत्र भी सुगम है।

अनाहारक जीवोंका अन्तर कार्मणकाययोगियोंके समान है ॥३९६॥

....

[1] चतुर्णां क्षपकाणां सयोगकेवलिनां च सामान्यवत्। स.सि,१.८.

[2] ता. प्रतौ 'अणाहार' इति पाठः।

[3] अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया एकजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम्। सासादनसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। उत्कर्षेण पल्योपमासंख्येयभागः। एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम्। असंयतसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। उत्कर्षेण मासपृथक्त्वम्। एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम्। सयोगिकेवलिनां नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः। उत्कर्षेण वर्षपृथक्त्वम्। एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम्। स.सि. १,८.

मिच्छादिट्ठीणं णाणेगजीवं पडुच्च अंतराभावेण, सासणसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च एगसमयपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागजहण्णुक्कस्संतरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य, असंजदसम्मादिट्ठीणं णाणाजीवं पडुच्च एगसमय-मासपुधत्तंतरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य, सजोगिकेवलीणं णाणजीवं पडुच्च एगसमय-वासपुधत्तजहण्णुक्कस्संतरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य दोण्हं साधम्मुवलंभादो ।

विसेसपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

णवरि विसेसा, अजोगिकेवली ओघं[1] ॥३९७॥

सुगममेदं ।

(एवं आहारमग्गणा समत्ता ।)

एवंमतराणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं[2]।

....

क्योंकि, मिथ्यादृष्टियोंका नाना और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवां भाग अन्तरोंसे, तथा एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे, असंयतसम्यग्दृष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट मासपृथक्त्व अन्तरोंके द्वारा, और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे, सयोगिकेवलियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कृष्ट वर्षपृथक्त्व अन्तरसे, तथा एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे दोनोंमें समानता पाई जाती है ।

अनाहारक जीवोंमें विशेषता प्रतिपादन करनेके लिए उत्तर सूत्र कहते हैं-

किन्तु विशेषता यह है कि अनाहारक अयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥३९७॥

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई ।

इस प्रकार अन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

....

१ अयोगिकेवलिनां नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः । उत्कर्षेण षण्मासाः । एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् । स.सि. १,८.

२ अन्तरमवगतम् । स.सि. १,८.